

० गीतु ०

जागो जीवन धन मुहिंजा मिठिड़ा, जागो प्राण प्यारा ।

जागो साह जा साहिब सचिड़ा, जागो नैननि तारा ॥

जै जमुना जी चवंदा चवंदा, सन्त वजनि था स्नान ।

मन्दिरनि मंझि वजनि था मालिक, धिण्ड घडिड़याल नगारा ॥१॥

शोभा सागर रूप उजागर, रस रत्नाकर साईं ।

दर्शनु देई दिलिड़ी ठारियो, सत्संगति सींगारा ॥२॥

आनन्द कन्द अलबेलड़ा साईं, अवध धणियुनि अनुरागी ।

श्री मैगसिचन्द्र मनोहर मूरति, मन मोहन मनठारा ॥३॥

रस निधि राणा नेही निमाणा, शील सियाणा साईं ।

दीननि बन्धू दासनि वत्सल, दर्दीली दिलि वारा ॥४॥

प्रेम भगति जो अखुटु खजानो, तोई खावन्द खोलियो ।

देई द्राणु द्रनि खे दातर, अनन्त करीं उपकारा ॥५॥

सन्त शिरोमणि चतुर चूड़ामणि, गुणनिधि श्री गुरुदेवा ।

नाम जे रंगिड़े रंगी सभनि खे, राघव जा रिझवारा ॥६॥

जयड़ी मनाए जुगल जी जागियुमि, मालिकु मीरपुरि वारो ।

करे प्रणामु पृथ्वीअ खे प्रीतमु, धरणीअ ते पग धारा ॥७॥

हथु मुखु धोई मधुर कलेऊ, जुगल धणियुनि खे खारायो ।

पोइ प्रसादु प्रीति सां पातो, साईं साहिब सुकुमारा ॥८॥